पाठ-18

शंकराचार्य मध्यप्रदेश में

– संकलित

आइए सीखें

■ आध्यात्मिक क्षेत्र का ज्ञान ■ शिक्षा के महत्वपूर्ण केन्द्र और स्थल ■ सन्धि, सहायक क्रिया।

मध्यप्रदेश प्राचीनकाल से शिक्षा का महत्वपूर्ण केन्द्र रहा है। कृष्ण–सुदामा ने यहाँ सान्दीपनि आश्रम में शिक्षा प्राप्त की थी। आचार्य शंकर ने ओंकारेश्वर मध्यप्रदेश में ही दीक्षित होकर अपने सिद्धान्तों के प्रतिपादन के लिए सम्पूर्ण भारतवर्ष का भ्रमण किया था।

जन्म और विद्याभ्यास : शंकराचार्य का जन्म लगभग बारह सौ वर्ष पूर्व केरल में पूर्णा नदी के तट पर स्थित कालड़ी ग्राम में सन् 780 ई. में हुआ था। इनके पिता का नाम शिवगुरु और माता का नाम आर्याम्बा था। शंकर बाल्यकाल से ही विलक्षण प्रतिभा के धनी थे। एक वर्ष की उम्र में वह बोलने लगे थे। उनकी स्मरण–शक्ति इतनी प्रखर थी कि तीन वर्ष की उम्र में एक–बार जो सुन लेते थे, उसे अक्षरश: दुहरा देते थे। अत: शीघ्र ही उनका पाटी संस्कार किया गया। कुछ ही दिनों बाद शिवगुरु का देहान्त हो गया। माता आर्याम्बा ने उनका लालन–पालन किया। पाँच साल की वय में उनका उपनयन संस्कार हुआ; और शिक्षा के लिए गुरुकुल भेजा गया। सात वर्ष की अवस्था में उन्होंने शास्त्रों में प्रवीणता प्राप्त कर ली थी।

संन्यास की ओर : अध्ययन पूरा कर वह गुरुकुल से घर पहुँचे। बालक शंकर के मन में पूर्व संस्कारवश संन्यास ग्रहण करने की इच्छा बलवली होती गई। माता के प्रति लगाव के कारण उनके मन में दुविधा थी। वे नित्य अपनी माता के साथ स्नान करने नदी पर जाते थे। एक दिन जब वे नदी में स्नान कर रहे थे, मगरमच्छ ने उनके पैरों को पकड़ लिया। वह चीखे; चिल्लाए। तट पर माँ अर्याम्बा खड़ी थी। यह दृश्य देखकर वह विचलित हो गईं। उनकी आँखों में आँसू भर आए। संस्कारवश अकस्मात् ही शंकर के

शिक्षण संकेत

▸ शिक्षक प्राचीन शिक्षा केन्द्रों की जानकारी भी दें ▸ आश्रम व्यवस्था को समझाएँ ▸ भारत की विदुषी नारियों के बारे में विद्यार्थियों को बताएँ ▸ प्रदेश के प्रमुख तीर्थ स्थलों एवं पर्यटन केन्द्रों से परिचय कराएँ ▸ शंकराचार्य की भाँति अन्य महापुरुषों के बारे में भी छात्रों से चर्चा करें।

मुँह से निकला, ''माँ, मुझे संन्यास की अनुमति दे दीजिए। हो सकता है, मेरा जीवन बच जाए।'' पुत्र के प्राण-रक्षार्थ माता ने अनचाहे वैसा ही मान लिया और अनुमति दे दी। कहते हैं कि तभी मगरमच्छ ने उन्हें मुक्त कर दिया और वे तैरकर घाट पर आ गए।

गुरु की खोज में : अपनी माता से आज्ञा लेकर बालक शंकर ने घर छोड़ दिया वे गुरु की तलाश में निकल पड़े। इस समय शंकर की अवस्था आठ वर्ष की थी। वह उत्तर भारत की ओर चल पड़े। यात्रा में उन्हें अनेक आश्रम मिले; जिसमें शृंगेरी और वातापि आश्रम प्रमुख थे। वातापि आश्रम से निकलकर उन्होंने गोदावरी पार की और दण्डकारण्य में प्रवेश किया। उल्लेखनीय है कि वनवासकाल में इसी पथ से श्री राम गुजरे थे। दण्डकारण्य से इन्द्रावती और महानदी पारकर वह अमरकण्टक (मध्यप्रदेश) पहुँचे। अमरकण्टक मेकलसुता, जिसे रेवा, नर्मदा नदी आदि नामों से जाना जाता है, का उद्‌गम स्थल है। नर्मदा की परिक्रमा का महत्व जानकर उनके मन में भी परिक्रमा करने का विचार आया। नर्मदा का परिक्रमावासी बनकर वह ओंकारेश्वर पहुँचे।

ओंकारेश्वर में बाल-शंकर : ओंकारेश्वर मध्यप्रदेश के निमाड़ अंचल (खण्डवा जिले) में विंध्य पर्वत की गोद और पुण्यसलिला नर्मदा के तट पर स्थित है। ओंकारेश्वर में नर्मदा दो पहाड़ियों के बीच में से बहती है। भारत की भावनात्मक एकता के तार इसी ओंकारेश्वर से जुड़े हैं। यहाँ गुरु गोविन्दपाद के आश्रम में प्रवेश करते ही शंकर को अपूर्व मानसिक शान्ति मिली। अपने मनोनुकूल आश्रम समझकर उन्होंने अपनी यात्रा को यहीं विराम दे दिया। इस समय उनकी उम्र बारह वर्ष की थी।

आश्रम में शंकर को सहसा सामने देखकर गुरु गोविन्दपाद ने प्रश्न किया, ''तू कौन है बालक?'' शंकर ने कहा, ''मैं न पृथ्वी हूँ, न जल हूँ, न अग्नि हूँ, न वायु हूँ, इनमें से कुछ भी नहीं हूँ; न ही कोई गुण-धर्म हूँ। मैं तो अखण्ड-चैतन्य हूँ।''

शंकर के इस उत्तर से गुरु विस्मित रह गए। गुरु के सान्निध्य में शंकर चार वर्ष रहे। इन चार वर्षों में उन्होंने वेदान्त का अध्ययन पूर्ण कर लिया। सोलहवें वर्ष में उन्होंने अपनी जिज्ञासाओं का उत्तर पा लिया और 'प्रस्थानत्रय' भाष्य लिखा।

जब वे ओंकारेश्वर में थे, उस समय नर्मदा में भीषण बाढ़ आई। बाढ़ ने तटों को तोड़कर गाँवों में विनाश-लीला की। अनेक गाँव बह गए। अनेक मकान ढह गए। ग्रामवासी त्राहि-त्राहि कर उठे। शंकर से वेदना देखी न गई। ग्रामवासियों को कष्टों से उबारने के लिए उन्होंने 'नर्मदाष्टक' की रचना की; और अपनी यौगिक-शक्ति से नर्मदा के जल को कमण्डल में भर लिया।

गुरु को यह जानकर प्रसन्नता हुई कि शंकर ने योग में भी महारत हासिल कर ली है। उन्होंने शंकर को बुलाया और कहा, ''शंकर, जिस तरह बादल एक स्थान से दूसरे स्थान तक बरसते हुए विचरण करते हैं तथा वनस्पतियों पर बरसकर धरा को धन-धान्य से परिपूर्ण करते हैं, उसी तरह तुम भी भ्रमण करो। लोक को सही दिशा देने का प्रयास करो। देश के महान् धर्मों में तंत्रवाद प्रवेश कर गया है। समरसता के स्थान पर विलासिता का बोलबाला हो रहा है। 'तेरे' और 'मेरे' के द्वैत में लोग फँसे हैं, उनको भ्रम से निकालो। वैदिक धर्म के

पुनरुत्थान के लिए प्रयत्न करो। अब तुम शास्त्रों में पारंगत हो गए हो। शास्त्रार्थ के लिए काशी जाओ।''

माहिष्मती की ओर प्रस्थान : काशी में शंकर मीमांसा दर्शन के प्रकाण्ड विद्वान कुमारिल भट्ट से मिलने गए। कुमारिल भट्ट उस समय समाधि की स्थिति में थे। समाधि टूटने पर उन्होंने शंकर को देखा; और शंकर से शास्त्रार्थ करने में अनिच्छा प्रकट की। शंकर खिन्न हो गए। शंकर की खिन्नता को कुमारिल भट्ट ने भाँप लिया। उन्होंने शंकर को माहिष्मती जाकर मण्डन मिश्र से शास्त्रार्थ करने की सलाह दी।

मण्डन मिश्र कुमारिल भट्ट के शिष्य और कर्म-मीमांसा के अप्रतिम विद्वान थे। उनसे भेंट करने शंकर माहिष्मती (महेश्वर) पहुँचे। पनघट पर महिलाएँ जल भर रही थीं। उन्हीं में से एक पनिहारिन सुवाम्बा से मण्डन मिश्र के घर का पता पूछा। उसने संस्कृत में ही शंकराचार्य से वार्तालाप किया; बताया कि पास ही राजमार्ग पर मण्डन मिश्र का निवास है। वहाँ दरवाज़े पर पिंजड़ों में बन्द शुक-सारिकाएँ, शास्त्रार्थ करते हुए मिलेंगे।

जब शंकराचार्य मण्डन मिश्र के निवास पर पहुँचे, मण्डन मिश्र को समझते देर न लगी कि शंकराचार्य शास्त्रार्थ के लिए आए हैं। शास्त्रार्थ में मण्डन मिश्र की पत्नी भारती निर्णायिका बनीं। भारती उद्‌भट विदुषी और विलक्षण प्रतिभा की स्वामिनी थी। घोषणा के अनुसार हारने वाले को विजेता का शिष्य बनना था। मण्डन मिश्र पराजित हुए। फलतः मण्डन मिश्र ने शंकराचार्य का शिष्यत्व ग्रहण किया। शंकराचार्य ने उन्हें सर्वाधिक महत्वपूर्ण शृंगेरी मठ का प्रथम प्रधान आचार्य नियुक्त किया। मण्डन मिश्र सुरेश्वराचार्य के नाम से प्रसिद्ध हुए। मध्यप्रदेश को यह गौरव प्राप्त है कि उसके एक पुत्र को दक्षिण में भारतीय एकता का विस्तार करने का अवसर प्राप्त हुआ।

उज्जयिनी में शंकराचार्य : अपनी दिग्विजय यात्रा के द्वितीय चरण में जब शंकराचार्य सन् 804 ई. में उज्जयिनी आए, उज्जयिनी कापालिकों का प्रमुख केन्द्र बन चुकी थी। समूचे भारत में कापालिकों का प्रसार हो चुका था। उन्हें कापालिकों के अमर्यादित आचरण देखकर भयंकर कष्ट हुआ। आचार्य ने उनसे शास्त्रार्थ करने की ठानी। क्रकच नामक कापालिक जब शास्त्रार्थ में हार गया तो उसने अपने शिष्यों के साथ आचार्य पर आक्रमण कर दिया; किन्तु ऐन वक्त पर सेना के आ जाने से वे बच गए। उग्रभैरव नामक कापालिक छद्‌म वेष धारणकर आचार्य का शिष्य बन गया था। अवसर पाकर उसने भी त्रिशूल से आचार्य का सिर काट देने का प्रयास किया किन्तु शिष्यों की सजगता से आचार्य बच गए।

कापालिकों को शास्त्रार्थ में परास्त करने के बाद आचार्य शंकर ने अन्य मतावलम्बियों के मतों का खण्डन किया। उन्होंने उस समय के भारत के विभिन्न मतावलम्बियों के अव्यावहारिक, अनुचित विचारों, पारस्परिक मन-मुटाव और फूट का अनुभव किया; और उन्हें मनुष्य जैसा आचरण करने की प्रेरणा दी। आचार्य शंकर ने उस युग के समाज में व्याप्त कुरीतियों को देखा; और कापालिकों जैसे भ्रष्ट धर्मावलम्बियों को शास्त्रार्थ में पराजित किया।

आचार्य शंकर महान् संगठन-कर्ता भी थे। उन्होंने भटक से कटक तथा कन्या कुमारी से कश्मीर तक की पैदल यात्रा की। उन्होंने चार पीठों की स्थापना की थी। ये चारों पीठ क्रमशः उत्तर में बद्रीनाथ धाम, दक्षिण

में रामेश्वरम्, पूर्व में जगन्नाथपुरी और पश्चिम में द्वारिका के नाम से विख्यात हैं। इस तरह उन्होंने पोखरों में बँटे हुए देश को सागर का आभास कराया; और देश को एक-सूत्र में बाँधा। उन्होंने भारत की रूढ़ियों पर जमकर प्रहार किया। वह अपने सपनों का ऐसा भारत देखना चाहते थे जिसमें सामाजिक समरसता की सुगंध हो। मात्र 32 वर्ष की आयु पाकर भी आठवीं-नवीं शताब्दी के पुनर्जागरण और राष्ट्र निर्माण में उन्होंने महत्त्वपूर्ण भूमिका निभाई। युग-पुरुष आदि शंकराचार्य के प्रति हम सब भारतवासी श्रद्धावनत है।

शब्दार्थ

सान्दीपनि आश्रम=उज्जैन में स्थित प्राचीन गुरुकुल। **विलक्षण प्रतिभा**=अद्वितीय बौद्धिक योग्यता। **प्रखर**=तीव्र। **पाटी-संस्कार**=विद्यारंभ संस्कार। **प्रवीणता**=योग्यता, दक्षता, महारत, पारंगत। **मेकलसुता**=मेकल पर्वत श्रेणी की पुत्री नर्मदा। **भावनात्मक एकता**=विचार और भावों के स्तर पर संगठित रहना। **विस्मित**=आश्चर्य चकित। **सान्निध्य**=निकटता, सामीप्य। **जिज्ञासा**=जानने की इच्छा। **प्रस्थानत्रय**=वेद, उपनिषद्, गीता और ब्रह्मसूत्र (तीन ग्रंथ मिलकर)। **समरसता**=मिल-जुलकर समानता के साथ रहने का भाव। **विलासिता**=भौतिक सुख। **पुनरुत्थान**=फिर से उन्नति करना। **शास्त्रार्थ**=शास्त्रों के ज्ञान के आधार पर वाद-विवाद। **खिन्नता**=नाराजी, उदासी। **माहिष्मती**=महेश्वर का प्राचीन नाम। **शुक-सारिकाएँ**=तोता-मैना। **निर्णायिका**=निर्णय देने वाली। **हस्तक्षेप**=बीच में टोकना, बोलना। **अर्धांगिनी**=पत्नी। **शिरोधार्य**=स्वीकार करना। **पोखर**=छोटे-छोटे जलाशय। **श्रद्धावनत**=आदर प्रकट करना, पूज्य भाव। **छद्म**=नकली।

अनुभव विस्तार

वस्तुनिष्ठ प्रश्न

1. **(क) सही जोड़ी बनाइए—**
   - उज्जयिनी – कुमारिल भट्ट
   - काशी – नर्मदा का उद्गम
   - अमरकण्टक – शंकराचार्य का जन्मस्थल
   - कालड़ी – कापालिकों का केन्द्र

   (ख) दिए गए शब्दों में से उपयुक्त शब्द चुनकर रिक्त स्थानों की पूर्ति कीजिए—
   - शंकराचार्य की शिक्षा-दीक्षा..... में हुई थी। (माहिष्मती/ओंकारेश्वर)
   - गुरु की खोज में वह..... चल पड़े। (उत्तर से दक्षिण की ओर/दक्षिण से उत्तर की ओर)
   - उन्होंने शंकर को ..... से शास्त्रार्थ करने की सलाह दी। (मण्डन मिश्र/कापालिक)
   - मध्यप्रदेश को यह गौरव प्राप्त है कि उसके पुत्र को ..... भारतीय एकता का विस्तार करने का अवसर प्राप्त हुआ। (दक्षिण में/उत्तर में)

अति लघु उत्तरीय प्रश्न

2. निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर एक-एक वाक्य में दीजिए—

(क) सान्दीपनि आश्रम क्यों प्रसिद्ध है?

(ख) नर्मदा का उद्‌गम स्थल कहाँ है?

(ग) कुमारिल भट्‌ट की प्रसिद्धि का क्या कारण था?

(घ) शंकराचार्य का मण्डन मिश्र से शास्त्रार्थ कहाँ हुआ था?

(ङ) कापालिकों का मुख्य केन्द्र कहाँ था?

लघु उत्तरीय प्रश्न

3. निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर तीन-से-पाँच वाक्यों में दीजिए—

(क) शंकराचार्य ने किन चार पीठों की स्थापना की?

(ख) ''शंकर बाल्यकाल से ही विलक्षण प्रतिभा के धनी थे।'' इस सम्बन्ध में शंकर की तीन विशेषताएँ लिखिए।

(ग) 'नर्मदाष्टक' की रचना शंकराचार्य ने कब की? उस घटना का उल्लेख करें।

(घ) गुरु गोविन्दपाद ने प्रसन्न होकर शंकर को क्या आदेश दिया?

(ङ) शंकर ने माता से संन्यास की आज्ञा किस प्रकार प्राप्त की?

भाषा की बात

4. निम्नलिखित शब्दों के शुद्ध उच्चारण कीजिए—

प्रस्थानत्रय, त्राहि-त्राहि, प्रकाण्ड, ओंकारेश्वर, केन्द्र, दृश्य

5. निम्नलिखित शब्दों की शुद्ध वर्तनी लिखिए—

सिरोर्धाय, पुर्नजागरन, भारतिय, अचंल

6. उदाहरण के अनुसार निम्नलिखित शब्दों की संधि कीजिए—

उदाहरण : विद्‌या + अभ्यास = विद्‌याभ्यास

शंकर + आचार्य, देह + अन्त, शास्त्र + अर्थ, सर्व + अधिक, दिक् + विजय, पुनः + जागरण, महा + ईश्वर।

7. उदाहरण के अनुसार 'त्व' प्रत्यय लगाकर नए शब्द बनाइए—

शब्द	प्रत्यय	नया शब्द
शिष्य	त्व	शिष्यत्व
गुरु		
देव		
मनुष्य		
पुरुष		
नारी		

ध्यान दीजिए

निम्नलिखित गद्यांश को पढ़िए और रेखांकित शब्दों पर ध्यान दीजिए—

''स्त्री के मैले कुचैले कपड़ों से दुर्गंध आ रही थी। संयोग से पंडित मदनमोहन मालवीय भी उसी रास्ते से गुजर रहे थे। वे उस स्त्री को देख वहीं रुक गए। एक परिचित युवक की सहायता से उन्होंने उस स्त्री को तांगे में बैठाया और समीप के अस्पताल ले गए। वहाँ युवक ने स्त्री की देखभाल की जिम्मेदारी लेते हुए पण्डित मदनमोहन को अपने काम पर जाने को कहा, पर पण्डित जी ने मना कर दिया।''

उपर्युक्त रेखांकित शब्दों में दो प्रकार की क्रियाओं का प्रयोग किया गया है—(1) मुख्य क्रिया (2) गौण क्रिया। जिसे नीचे तालिका में दर्शाया गया है—

संयुक्त क्रिया	मुख्य क्रिया	गौण क्रिया
आ रही थी	आना	रहना, थी (होना)
गुजर रहे थे	गुजरना	रहना, थे (होना)
रुक गए	रुकना	गए (जाना)
ले गए	लेना	गए (जाना)
लेते हुए	लेना	होना
मना कर दिया	मना करना	दिया (देना)

गौण क्रियाएँ मुख्य क्रियाओं के साथ सहायक की भाँति कार्य करती हैं। इसलिए इस प्रकार की क्रियाओं को सहायक क्रिया कहते हैं।

8. निम्नलिखित गद्यांश को पढ़िए तथा संयुक्त क्रियाओं को छाँटकर लिखिए—

''अपनी माता से आज्ञा लेकर बालक शंकर ने घर छोड़ दिया और गुरु की तलाश में निकल पड़े। वह उत्तर भारत की ओर चल पड़े। यात्रा में उन्हें अनेक आश्रम मिले। वातापि आश्रम से निकलकर उन्होंने गोदावरी पार की और दण्डकारण्य में प्रवेश किया।''

अब करने की बारी

- ऐसे अन्य महापुरुषों के नाम खोजिए जिन्होंने भारत की रक्षा, भारत की सेवा और भारत की एकता के लिए अपना जीवन समर्पित किया।
- ओंकारेश्वर, महेश्वर और उज्जैन के बारे में जानकारी संकलित कीजिए।
- नर्मदा के परिक्रमा पथ को जानिए।

❑❑